श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त 2026

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. .....द्वारा तत्वज्ञान रुपी अर्क प्राप्त होने से दोषों से मुक्ति और गुणों से जीवन बनकर ही रहता है ।
२. न्याय से उपार्जन किया हुआ द्रव्य ही ..... में वापरना ।
३. तत्व सुनने की इच्छा या जिज्ञासा बुद्धि का ..... गुण है ।
४. जिस काल में दिन प्रति दिन समस्त पदार्थों के वर्णादि गुणों की वृद्धि होती है वह ..... है ।
५. जीवन में ..... का गुण मिले हुए मानवभव को सफल बनाने का श्रेष्ठ उपाय है ।
६. तीसरी प्रदक्षिणा देते समय जिन मंदिर रुप ..... के गुणों को हृदय में याद कर लेना ।
७. सुपार्श्वनाथ प्रभु ..... नगरी में केवलज्ञान पाये ।
८. प्रत्येक वनस्पतिकाय को छोडकर बाकी रहे ..... अदृश्य होने से हम चर्मचक्षु से देख नहीं सकते ।
९. सिद्ध के जीव लोक के छोर पर जाकर अटक जाते है, क्योंकि आगे ..... का अभाव है ।
१०. आर्यता के संस्कारों से रहित देश ..... है ।
११. श्री अभिनंदन प्रभु ..... के भव में सम्यक्त्व पाये ।
१२. शरीर योग्य पुद्गलों को ग्रहण करके उसे रक्त आदि में परिणमित करने की शक्ति .....है ।
१३. ..... बिना के सब गुण अंक बिना के शुन्य जैसे है ।
१४. मन में ..... समान प्रभु को स्थापित करना ।
१५. अति सूक्ष्म काल का ..... घटक समय है ।
१६. ~~उपकारीयों के उपकार की स्मृति एंव प्रति उपकार करने की सदा तैयारी यह ..... का लक्षण है ।~~
१७. बर्तन वगैरह पदार्थों के घर्षण से टकराने से उत्पन्न होता नाद ..... है ।
१८. धर्म जीव को ..... की ओर ले जाता है ।
१९. ..... नाम के आरे में मनुष्य वैतादय पर्वत की दक्षिण उत्तर की तरफ रहे हुए गंगा सिंधू की गुफाओं में रहेंगे ।
२०. असत् का संग हमे ..... बनाता है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. किस आरे के लोग बोर प्रमाण भोजन कर संतुष्ट होने वाले होते है ? १५
२. परमात्मा के दर्शन करने जाते समय किसका त्याग सर्व प्रथम करना चाहिये ?
३. सुनी हुई वाणी भूले बिना स्मृति में रखना क्या है ?
४. पद्म प्रभु के प्रमुख गणधर का नाम ?
५. दोषों के प्रति धिक्कार और गुणों के प्रति पक्षपात क्या कहलाता है ?
६. जैन दर्शन अन्धकार को क्या मानता है ?
७. दीर्घदृष्टि वाली व्यक्ति कार्य प्रारम्भ करने से पहले किसका विचार करती है ?
८. जयवियराय सूत्र कौनसी मुद्रा में बोला जाता है ?
९. जीव जहाँ भी जाता है, कौन से पुद्गलों को ग्रहण करता है ?
१०. प्रभु के गुणगान पूर्वक विधिसहित चैत्यवंदन करना क्या कहलाता है ?
११. संभवनाथ प्रभु ने पूर्वभवमें क्या करके तीर्थंकर नाम कर्म बांधा ?
१२. स्कंध के साथ जुडा हुआ स्कंध का छोटे में छोटा अविभाज्य सूक्ष्म अणु क्या कहलाता है ?
१३. वालिया डाकु को वाल्मिकी ऋषि बनाने वाला कौन सा गुण था ?
१४. चंद्रकांत मणि में से निकलने वाला प्रकाश क्या कहलाता है ?
१५. छोटा सासुकृत भी नजर आये तो क्या करना चाहिये ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१) पअेसा २) दीहा ३) भास ४) पुग्गला ५) फासा ६) सहावो ७) आस्ति ८) कट्ठा ९) सुहुमा १०) छप्पिय १०
११) पलिया १२) अदिस्सा १३) पंचवि १४) एग १५) सया १६) थिर १७) स्कंध १८) चेव १९) गलन
२०) हवंति

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - **१०**

A		B
१)	रायपसेणी	१) कषाय
२)	मान	२) अंग
३)	भीष्म पितामह	३) मद
४)	अजीर्ण	४) पालक
५)	सुकृत	५) गांगेय
६)	ऐश्वर्य	६) द्विइन्द्रिय
७)	अनंतकाय	७) रोगो का मूल
८)	इल्ली	८) चतुरेन्द्रिय
९)	मक्खी	९) अनुमोदना
१०)	समवायांग	१०) उपांग

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - **१०**

१. मार्गानुसारी के गुण कितने ?
२. नमि-विनमि को धरणेन्द्र ने कितनी महाविद्यायें दी ?
३. संज्ञी पंचेन्द्रिय को कितने प्राण ?
४. ऋषभदेव प्रभु के साथ एक समय में कितने सिद्ध हुए ?
५. बुद्धि के गुण कितने ?
६. शीयलव्रत की वाड कितनी ?
७. आचार्य भगवन के गुण कितने ?
८. उपयोग के प्रकार कितने ?
९. ऋषभदेव प्रभु का आयुष्य कितना ?
१०. चारित्र के प्रकार कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ - **१०**

१. जिस क्रिया अथवा नियमो के अनुसरण से सम्यक् तप की वृद्धि हो वह चारित्राचार ।
२. जैन ध्वज के मध्य में स्वस्तिक है ।
३. उपाध्याय महाराज के २५ गुण होते हैं ।
४. अपने जीवन में उद्भट वेश का त्याग कर उचित वेश का परिधान करना चाहिये ।
५. बलीन्द्र ने उपर की बांयी दाढ़ा ली ।
६. भरत महाराज ने धर्मचक्र तीर्थं प्रवर्तित किया ।
७. बयालीस दोष रहित ढूंढकर गोचरी लेना एषणा समिति ।
८. अर्णिकाचार्य स्वयं के जख्म में से रक्त की बूंदे पानी में गिरते देख अस्वस्थ हो गये ।
९. स्पर्श और घ्राणेन्द्रिय सहित जीव द्वीइन्द्रिय है ।
१०. मन वचन काया के आलंबन से प्रवर्त वीर्य वह करण वीर्य ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - **१०**

१. केवलज्ञानी को भी समय समय पर ज्ञान में से दर्शन में तथा दर्शन में से ज्ञान में सादि अनंत परिवर्तन चालू रहता है ।
२. राजन, किले की नींव में नीति से प्राप्त दस मोहरे डाल दे ! काम बन जायेगा ।
३. द्वारपर अतिथि का आगमन भी पुण्य योग का उदय माना जाता है ।
४. जब ज्ञान शक्ति का उपयोग हो तब वह ज्ञानोपयोग है ।
५. प्रभु समवशरण में पूर्वद्वार से प्रविष्ट हुए ।
६. शास्त्र कहते हैं, सुई के अग्रभाग जितने साधारण वनस्पतिकाय में अनंत जीव हैं ।
७. मन को सतत अशुभ निमित्त और आलंबन मिलते जाने से धर्म,दया,क्षमा,करुणा आदि गुण गायब हो जाते है ।
८. जीव विचार जानने के पश्चात भी अपने जीवन में जयणा न आवे तो अपना ज्ञान निष्फल होता है ।
९. शील रक्षा के लिये अपनी लक्ष्मण रेखा का कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिये ।
१०. संवेग निर्वेद युक्त देशना सुनकर भरत महाराज के पुत्र ऋषभसेन को वैराग्य हुआ ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - **१५**

१. ओम २) ऋषभदेव प्रभु का केवलज्ञान कल्याणक
३) जैसा संग वैसा रंग ४) पर्याप्ति ५) वायुकाय और उसकी विराधना

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. [illegible] सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com